मंतोड़ा

आजकल के लड़कामन

श्रेया खेमानी

चंदा के शरीर में एक नई थकान नज़र आ रही थी। उसकी उम्र से ज़्यादा।

"क्या हुआ?" मैंने पूछा।

"कुछ नहीं।"

"सतीश?" मैंने मुस्कराते हुए पूछा। "या गोलू?"

"का बोल्हूँ दीदी? रोज़ यहीच होथे आजकल। बहुत बत्तमीज हो गे हे ओमन ह... गोलू त पाँच दिन में एक बार स्कूल आथे, बाकी समय दारू-भट्टी के बगल में या मन्दिर के सीढ़ी पे बैठे रथे। जब मैं स्कूल आथौं त मोर ऊपर कुछ-न-कुछ कमेंट भी करथे। अच्छा नई लगे।"

कोविड के बाद बस्ती के कई बच्चों को स्कूल छोड़कर कारखानों और दुकानों में काम करके कमाना शुरू करना पड़ा था। इन बच्चों के साथ काम करना हमारे लिए एक नई चुनौती थी - खासकर लड़कों के साथ। कुछ बच्चे तो चंदा से 4-5 साल ही छोटे रहे होंगे।

"यह वो उम्र है - ऐसी चीज़ें होती ही हैं, बात करना होगी उनसे।" मैंने कहा।

वह चुप रही।

"इतनी आसानी-से हिम्मत मत हार। बदलेंगे।"

उसने कहा तो कुछ नहीं मगर हल्के-से अपना सिर हिलाया।

मुझे बात वहीं छोड़ देनी चाहिए थी मगर मैंने खुद को रोका नहीं, "अरे, इतना बुरा मत मान, बच्चे ही तो हैं।"

"ह्म्म्... बच्चे। इसीलिए आप से कुछ नहीं कहती। आपने बार-बार पूछा तो बोलना पड़ा। जो भी हो, आप बच्चों का ही पक्ष लेती हैं, गलती हमेशा हमारी ही होती है न?" उसकी आवाज़ में गुस्सा था और आँखों से आँसू बहने ही वाले थे कि वो उठकर चली गई।

माया बगल में बैठी थी, वह भी अपने कन्धों को उचकाते हुए वहाँ से चली गई।

शाम को मैं गोलू से बात करने के लिए उसके घर गई। चंदा का घर वहाँ से दूर नहीं था, तो सोचा कि एक बार उससे मिलकर सॉरी तो बोल दूँ। रास्ते में चंदा की माँ दिख गईं। वो कम्पनी से लौट रही थीं। "कहाँ जात हस?" उन्होंने पूछा। "अरे, लाल जोहार दीदी! तोर इच घर जात रेहे हव। कइसे हस?" बात करते-करते हम दोनों उनके घर की ओर चलते रहे।

"तबियत कइसे हे, दीदी तोर?" मैंने उनसे पूछा।

"सब बने-बने बहिनी... कभी कभार ज़्यादा वजन हो जथे त एक साइड थोकन पिराथे। मगर वतना बुरा नई हे, दोबारा स्कैन करवाए बर भेजे रिहिस हे डॉक्टर ह। कालीच आईस हे रिपोर्ट ह, अँग्रेजी म लिखा हे, थोकन देख लेबे।"

उनके ऑपरेशन को शायद पाँच हफ्ते ही हुए थे जब उन्होंने चंदा को बताया कि वो फिर से पेट से थीं। इस बार चंदा ने ही उनसे कहा कि ऑपरेशन करना ठीक होगा। लेकिन चंदा का कहना था कि पापा को ऑपरेशन कर लेना चाहिए। कई बार धुलाई* करने की वजह से माँ का शरीर कमज़ोर हो चुका था। हम सब ने भी दीदी से यही कहा था। दीदी ने चंदा के पापा से बात करने की कोशिश की थी मगर वो माने नहीं, तो दीदी ने ही करा लिया।

जब घर पहुँचे तो देखा कि चंदा का छोटा भाई अपने गाल को पकड़कर चीख-चीखकर रो रहा था। चंदा पास में खड़ी थी - आँखों में गुस्सा और हाथ में टूटा मोबाइल। कई महीनों तक पैसे बचाकर उसने मोबाइल अपनी कमाई से खरीदा था। यह सब देखकर दीदी का दिमाग खराब हो गया। उन्होंने अपनी थैली रखी और चंदा पर चिल्लाकर एक

---

* *गर्भपात।*

थप्पड़ भी मार दिया। "चुप रे! जब देखो तब छोटे भाई से लड़ते रहती है!"

थप्पड़ ने न जाने क्या चोट पहुँचा दी कि चंदा ने उनसे कहा, "सही नाम रखा तुम्हारा। तुम सच में मन को तोड़ देती हो।"

दीदी ने कुछ नहीं कहा। अपने हाथ-पैर धोने चुपचाप छत पर चली गईं, जैसे कि उन्होंने बात सुनी ही न हो। लेकिन कन्धों में थकान के साथ वो चोट दिख रही थी।

चंदा ने मेरी ओर देखा। "कल आती हूँ। स्कैन्स तब देख लूँगी," मैंने कहा और वहाँ से निकल आई।

* * *

अगले दिन चंदा स्कूल नहीं आई। कई दिनों से बात चल रही थी कि स्कूल के कुछ शिक्षक दिल्ली के एक दूसरे स्कूल का विज़िट करेंगे, उनके काम के बारे में सीखने। चंदा का बहुत मन था जाने का। मगर उसके पापा कहीं आने-जाने नहीं देते थे। चिल्ला देते थे, अगर 6 बजे के बाद बाहर रहती तो। इस बार तो माँ भी गुस्सा थीं और ऑपरेशन के बाद घर में लड़ाई भी बहुत बढ़ गई थी।

"शायद ही जान दिही," माया ने कहा, "कल रात कुछ होगे ओकर यहाँ। ओकर बहिन के फोन पे बात होए रिहिस त पता चलीस हे। एकर सति आज नई आईस हे।"

"हाँ, में वही रेहे हव। माँ के साथ थोकन झगड़ा हो गे रिहिस हे, बात अतेक बड़े भी नहीं रिहिस हे मगर..."

"नहीं, रात में पापा संग आऊ होगे।"

"ओह।"

"पी के आए रिहिस हे शायद। आतेइच माँ ला मारेल धर लीस हे। चंदा ला भी मारीस हे शायद।"

* * *

उस शाम जब मैं उनके घर पहुँची तो दोनों ने कुछ नहीं कहा। दीदी ने स्कैन लाकर दिखाया और फिर किचन में चाय चढ़ाने घुस गईं।

"अरे, आज तक मुझे तुम्हारी माँ का नाम नहीं पता था। वाह! कितना सुन्दर नाम है," मैंने कहा। चंदा ज़ोर-से हँसने लगी। "सुन्दर?!! ते समझत हस वो ओकर मतलब?" उसने कहा। "माँ आठ बहनों में से एक है। लड़के के लिए कोशिश कर-करके उनकी माँ थक गई। पाँच लड़कियों के बाद जब वो पैदा हुई तो वो आखरी कड़ी जैसी थी - मन को उसने तोड़ ही दिया। इसीलिए मंतोड़ा नाम रखा। माँ उनके लिए दुःख की प्रतीक थी। माँ का वो दुःख देने का बोझ, उनके नाम में ही पिरो दिया। उनको कभी भूलने नहीं दिया।"

उस दिन चंदा ने गुस्से में जो दीदी को कहा था, वो याद आया। उसने दीदी की ओर देखा। दीदी को उसकी आँखों में गलती का एहसास दिखाई दिया लेकिन वे चुप रहीं। उन

दोनों की खामोश नज़रें देखती रहीं। फिर मैंने अपनी बेवकूफी का एहसास करते हुए चुपके से कहा, "ओह, मुझे तो नाम बहुत सुन्दर लगा। सॉरी कि मैं उसके मायने समझ नहीं पाई।"

मगर मंतोड़ा दीदी को बुरा नहीं लगा। उन्होंने कहा, "अरे, का सॉरी? वैसे भी ते नवा-नवा आए हस, आऊ छत्तीसगढ़ी काफी जल्दी सीख गे हस। अब भाषा के साथ-साथ धीरे-धीरे महिला मन के बारे में आऊ भी चीज़ सीखेल मिलही।"

"मैं भी तो महिला हूँ।"

"मगर सब महिला के जीवन एक बराबर नई होए ना..." चंदा ने कहा।

दीदी ने प्यार से हस्ते हुए मेरे कन्धों पर हाथ रखकर कहा, "चल, चाय पी ले।"

जब दीदी चाय लाने चली गई तो मैंने चंदा से पूछा, "क्या हुआ कल रात?"

"अरे, वहीच पुराना बात ल लेकर फिर से शुरू कर दीस पापा ह।"

"शादी?"

"हाँ, कुछ ऐसे ही। घर लौटते ही कल माँ को मारने लगे। बहुत पी लिया था उन्होंने। मुझे भी मारने लगे। कुछ एक महिने पहले किसी ने पापा के कान में कुछ भर दिया था। उस समय भी खूब मारा था हम दोनों को। कल रात नशे में थे तो वही बात फिर से दोहराने लगे और शायद कल गुरूजी भी मिले थे उनसे - साला पूरा वेतन का भी बता दिया। मैं तो आधा बताकर बाकी बचाकर रखती थी न। कहने लगे, 'नाक कटवा देगी तू हमारी' और कई गालियाँ देने लगे। 'अब्बड़ पैसा कमा के इही सब पर उड़ात हस' कहकर मेरा मोबाइल भी छीन लिया और सिम निकाल दिया... अभी इसी महिने से शादी के रिश्तों का आना भी बढ़ गया है और साथ में शादी करने का दबाव भी..."

चंदा कुछ पल शान्त थी फिर उसने कहा, "मैं शादी नहीं करना चाहती हूँ।"

"माँ तो साथ दे रही है न?"

"का साथ? मैं रिश्तों को टालती रहती हूँ और गालियाँ खाती रहती हूँ। आस-पड़ोस की महिलाएँ फुस-फुस करती रहती हैं। कहती हैं *'अब्बड़ होशियारी मारेल धर ले हे टुरी ह। बड़ा टीचर बन गे हे त कोई ओकर लायक नहीं हे। ज़्यादा पढ़ाई करे से ऐस्नेइच होथे।'* माँ भी कभी-कभी यही दोहराती और हाथ में सर पकड़कर उनसे कहती 'का करहूँ बहिनी, आजकल के लइकामन* ल त जानथौ...'।"

"का शिकायत करत हस मोर?" मंतोड़ा दीदी ने मुस्कराते हुए कहा। चंदा चुप हो गई।

"दीदी तोर स्कैन में सब नार्मल आ हे। पूरा साफ होगे।"

* *बच्चे।*

चाय पीते-पीते हम बातें करते रहे। बातों-बातों में दिल्ली की बात उठी। चंदा की आँख बड़ी हो गईं। उनमें उत्साह भी था और थोड़ा डर भी। दीदी ने यह देखकर कहा, "पूछती हूँ इसके पापा से। मगर नहीं मानेंगे, इस बार रहने दे।"

"चल दीदी," चंदा ने कहा, "6:30 बज गए। हमारा मीटिंग है।"

"ओह हाँ, मैं तो भूल ही गई थी। मेरे फोन पर ही जुड़ जाएँ क्या?"

"नहीं, मैं अपने मोबाइल से जुड़ जाऊँगी।" ऐसा कहकर चंदा ने मंतोड़ा दीदी से कहा, "माँ, में ह पापा से बिना पूछे फोन ला वापिस ले डरे हव सिम डालके। हमर एक मीटिंग हे आज।"

अचानक से दरवाज़े के पास से एक आवाज़ आई। "क्या करती रहती है फोन पर टुकुर-टुकुर दिनभर? मोहल्ले में तो और भी टीचर हैं, वो तो इतना नहीं करते। तुम कौन-सी इतनी महान टीचर बन गईं?"

रामीन बाई।

मंतोड़ा दीदी की सहेली। पड़ोस में रहती थीं और दोनों एक ही कम्पनी में काम करने जाती थीं। अक्सर शाम को कुछ देर तक छत पर दीदी के साथ बैठने आ जाती थीं। चंदा की उनसे उतनी पटती नहीं थी। वो शादी के बारे में बोलती रहतीं और चंदा के लिए रिश्ते ढूँढती रहती थीं।

मंतोड़ा दीदी उन्हें देखकर मुस्कराईं, "सही कहात हस बहिनी। मोला भी समझ नई आए, एमन का-का करत रहिथे। खैर। चल, ऊपर चलथन।"

दोनों छत पर चली गईं। चंदा सर हिलाते हुए सीढ़ी पर बैठ गई। वहाँ नेटवर्क ठीक आता था। मीटिंग शुरू हो चुकी थी। कारखानों में काम की परिस्थितियों पर बात हो रही थी और दूसरी प्रस्तुति चंदा को ही देनी थी। वह मंतोड़ा दीदी के काम के हालात और उनकी रोज़ी और बेरोज़गारी के दौर पर बात रख रही थी। कम्पनी में वे तगाड़ी में सामान ढोने का काम करती थीं। बहुत मेहनत का काम था।

पिछले महीने हमने महिलाओं के काम का एक सर्वे किया था - शिक्षकों और संगठन के युवा कार्यकर्ताओं ने अलग-अलग बस्तियों में महिलाओं से बातचीत की थी। चंदा ने अपनी माँ के साथ की थी। इस कम्पनी में तो उनको 2-3 हफ्ते ही हुए थे। इससे पहले 9 साल से वे एक ही कम्पनी में जाती थीं। ऑपरेशन के बाद डॉक्टर ने कम-से-कम 15 दिन के लिए काम पर जाने से मना किया था। इससे पहले उनकी बहन की तबियत खराब थी तो उन्होंने 10 दिन की छुट्टी ली थी और उनका खयाल रखने गाँव चली गई थीं। इतनी छुट्टियों के चलते उनको कम्पनी से निकाल दिया था। ठीक होने के बाद उन्होंने अब नया काम ढूँढ लिया था। यहाँ एक दिन की 180 रु. रोज़ी मिलती थी और वो पूरा पैसा चंदा के पापा

को दे देती थीं। फिर भी वे उनसे लड़ते थे - कभी पैसों पर तो कभी शक करके। चंदा को सबसे ज़्यादा गुस्सा, उनका पीकर माँ को मारने से था। वह अक्सर स्कूल आकर गुस्से में कहती, “महिलाएँ कब तक सहती रहेंगी ऐसे?”

“दीदी मुझे लगता है कि हमको बच्चों के काम के अनुभव पर भी उनसे बातचीत करना चाहिए। सतीश और गोलू के लिए भी कितना मुश्किल होता होगा न - कम्पनी में जाकर बैला बनकर काम करो या फिर घर और समाज के दबाव और ताने झेलो। इन दोनों के बीच उनके सपनों का क्या...? हम उनके शिक्षक होकर भी उनके जीवन को शायद समझ नहीं पा रहे हैं...” चंदा ने गम्भीरता से कहा। इतने में उसका नाम पुकारा गया, उसकी प्रस्तुति की बारी थी।

प्रस्तुति के बीच में ही रामीन बाई नीचे आ गईं। चंदा के सर को हलके से थपथपाया। चंदा ने अपने गुस्से को सम्भालते हुए अपनी बात जारी रखी। रामीन बाई मस्ती में अपनी जीभ निकालते हुए चली गईं। मंतोड़ा दीदी भी आकर चंदा से एक सीढ़ी ऊपर बैठ गईं। इयरफोन के चलते चंदा को पता नहीं चला। दीदी चुपचाप बैठकर चंदा की बातें सुनने लगीं। जब चंदा की नज़र उनपर पड़ी तो अचानक से वह अटक-अटककर बोलने लगी। दीदी ने उसके कन्धों पर हाथ रखा। “बोल ना, सही त कहात हस।”

उनकी आँखों में एक गर्व-सा था। चंदा की हिचकिचाहट गायब हो गई। अपनी बात पूरी करने के बाद उसने एक बार फिर-से माँ की ओर देखा। उनकी हल्की-सी मुस्कराहट ने चंदा के चेहरे पर भी एक मुस्कान ला दी। दोनों हँसने लगीं।

मगर उनकी हँसी अचानक से रुक गई, चंदा के पापा ड्यूटी से लौट आए थे। आँखें देखकर लग रहा था कि वे नशे में थे। ज़ोर-से चिल्लाने लगे और गन्दी-गन्दी गालियाँ देने लगे। मंतोड़ा दीदी भागकर नीचे, उनके पास आईं। वे दीदी को मारने ही वाले थे, मगर इस बार चंदा ने हिम्मत दिखाई। वह अपने पिताजी से बहुत डरती थी। कभी उनसे आँख मिलाकर बात नहीं करती थी। लेकिन इस बार चंदा से सहा नहीं गया। पहली बार न जाने कहाँ से वो हिम्मत आई, उसने उनसे शान्त मगर तीखी आवाज़ में कहा, “का बर मारत हस ओला? उही त हमन सबके ख्याल रखथे, ए घर ला चलाथे, पैसा कमाथे... ओ ह जाके पैसा ला दारु में नइ उड़ावत हे।”

उनका उठा हुआ हाथ चंदा की ओर मुड़ने लगा मगर मंतोड़ा दीदी ने उनके हाथ को पकड़ लिया, और चुपचाप उनके हाथ को नीचे कर दिया। वो कुछ नहीं बोले, गुस्से में हाथ छुड़वाकर कमरे में घुस गए।

“ते जा अब,” दीदी ने मुझसे कहा।
“मगर दीदी...”

“चिन्ता मत कर, में ह आज रात चंदा के पास सो जहूँ।”

* * *

सुबह-सुबह स्कूल जाने से पहले मैंने एक बार उनके घर का चक्कर काटा। दीदी घर पर नहीं थीं। चंदा स्कूल के लिए तैयार हो रही थी। कान में बाली डालते हुए उसने कहा, “पता है दीदी, मैंने कल प्रस्तुति में एक गलती की।”

“क्या? तुम ठीक हो न? मैं वो पूछने आई थी, प्रस्तुति के बारे में चर्चा करने नहीं।”

चंदा ने मुझे अपने हाथों में कुछ पैसे दिखाए। “नई कम्पनी में माँ को 180 नहीं, 190 मिलते हैं। पापा से झूठ बोलती हैं। वो उनके पास 180 जमा करके, रोज़ 10-10 रुपए चुपके से हमारे लिए बचाती हैं।”

जब मैं वहाँ से निकली तो गली में मंतोड़ा दीदी पानी भरते हुए दिख गईं।

नल पर महिलाएँ वही रोज़ की चपर-चपर कर रही थीं। “बेटी की शादी नहीं करतेस का वो...”

“ज़्यादा दिन रखबे त लेगईया नई मिले।”

“शादी करने लायक कब से होगे हे। नहीं त इति-उती घूमत रिही अऊ, का पता नाक ला कटवा दिही, है न...”

“आजकल के लइकामन ल त जानथस।”

एक पड़ोसिन ने फिर कहा, “मोर रिश्तेदार के यहाँ के एक लड़का हे। बने नौकरी हे अऊ सीधा-साधा भी हे। ओमन आवत हे गाँव से। आ जहू तुमन मिले बर हइं?”

मंतोड़ा दीदी चुप थीं। जब गुंडी भर गई तो उसको सर पर रखकर उन्होंने उनसे कहा, “कहाँ आ सखी बहिनी, मोर बेटी त दिल्ली जात हे। आजकल के लइकामन ल त जानथस....” और मुड़कर मुस्कराते हुए वे घर की ओर चलने लगीं।

श्रेया खेमानी: एक शिक्षक और एक्टिविस्ट हैं। रायपुर, छत्तीसगढ़ के औद्योगिक इलाके में अन्य महिला साथियों के साथ न्यू लर्निंग सेंटर में बच्चों को पढ़ाने का काम करती हैं। दस साल उन्होंने वहीं के एक मज़दूर संगठन के स्कूल में पढ़ाया। उनको बच्चों के साथ काम करने से ताकत और प्रेरणा मिलती है।

उनसे shreyakhemani@hotmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

सभी चित्र: उर्वी सावंत: सृष्टि इंस्टिट्यूट ऑफ आर्ट एण्ड डिज़ाइन टेक्नोलॉजी, बैंगलोर से पढ़ाई। चित्रकार, विज़ुअल कलाकार और डिज़ाइनर हैं।